



जीसस

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

दुनिया की हर सत्ता कुछ न कुछ माँगती है। एक वोट। एक खरीद। एक हस्ताक्षर। एक वफ़ादारी। एक स्वार्थ। प्रेम भी, जब एक बार संगठनों में प्रवेश कर जाता है, देर-सवेर अपना बिल थमा ही देता है। फिर एक ऐसी अनोखी शक्ति है जो लेन-देन के तर्क से बच निकलती है। मुफ्त में देना। यह दुनिया की सबसे पुरानी शक्ति है, और साथ ही सबसे कम समझी गई। जीसस शुरुआत नहीं थे, पर वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने शब्द की भाषा का प्रयोग किया और उसे एक ऐसी कथा में बदल दिया जो अपने पैरों पर चल सके। उन्होंने कोई सेना नहीं खड़ी की। कोई बैंक नहीं खोला। कोई मंदिर नहीं बनवाया। कोई भूभाग नहीं जीता। उन्होंने एक कहानी रची। और जब कोई कहानी इतनी मज़बूत हो जाती है कि अपने कहनेवाले के बाद भी ज़िंदा रहे, तब कुछ ऐसा जन्म लेता है जिसे सत्ता तुरंत पहचान लेती है: प्रभाव। तभी स्वार्थ का जन्म हुआ। उनसे प्रेम करने का स्वार्थ नहीं। उन्हें समझने का स्वार्थ नहीं। उनसे लड़े बिना उन्हें अपनी दिशा में मोड़ लेने का स्वार्थ। एक कथाकार के रूप में, मैं यही दृश्य कल्पना में देखता हूँ। लबादे में लिपटा एक आदमी। लंबा। सुंदर। लंबे बाल। सफ़ाचट चेहरा। वह एक शोरगुल भरी भीड़ के बीच से गुज़रता है और, आवाज़ ऊँची किए बिना, फिर भी कह पाता है। वह सबसे नहीं बोलता। वह हर एक से बोलता है।

थोड़े से शब्द। बिल्कुल सही शब्द। ऐसे शब्द जो आदेश नहीं देते। ऐसे शब्द जो खोलते हैं। ऐसे शब्द जो मौन से भी ज़्यादा गूँजते हैं। इसी तरह एक पैगंबर जन्म लेता है। तब नहीं जब कोई उसकी घोषणा करता है। बल्कि तब जब लोग एक-दूसरे को उसके बारे में बताने लगते हैं। पर मंदिर के लोगों ने भाँप लिया कि कुछ बदल रहा है। हाज़िरी के आँकड़े गिर रहे थे। जिज्ञासा का रुख बदल रहा था। और ध्यान भी। और जो ध्यान पर क़ाबू रखता है, वही सत्ता पर क़ाबू रखता है। सो उन्होंने उसे महल में बुलवा भेजा। ऊपरी तौर पर यह जानने के लिए कि वह कौन है। असल में यह समझने के लिए कि उसे कैसे रोका जाए। उसने फ़रीसियों का चोगा नहीं पहना था। उसने पगड़ी नहीं बाँधी थी। उसके पास सत्ता का कोई चिह्न नहीं था। और उससे भी बढ़कर, उसके पास वह लंबी दाढ़ी नहीं थी जो उस

युग के प्रचलित ढाँचे की पहचान थी। अपनी पूछताछ में उन्होंने उसे वापस बाड़े के भीतर लाने की कोशिश की। उसे कोई कोटि सौंपने की। उस पर कोई लेबल चिपकाने की। उसे उसी चीज़ का एक छोटा-सा रूप बना देने की जिसे वे पहले से जानते थे। पर वह हर बार फिसल जाता। और एक जवाब तो मानो तीर की तरह समय को चीरता हुआ चला आता है: तुम मेरी आँख का तिनका क्यों देखते हो, और अपनी आँख के शहतीर की चिंता क्यों नहीं करते? इशारा दाढ़ी की ओर था। क्योंकि हर सत्ता दूसरे के ब्योरे तब खँगालने लगती है जब वह अपने ही अंतर्विरोधों को बचा नहीं पाती। अपनी पद्धति से उसने लोगों को एक नई संभावना सिखाई थी: ढाँचे से बाहर जीना। व्यवस्था के विरुद्ध नहीं। उसके बाहर।

और यही कहीं ज़्यादा खतरनाक है। क्योंकि व्यवस्थाएँ जानती हैं कि विरोधियों से अपना बचाव कैसे करें। पर वे उस व्यक्ति को समझने में लड़खड़ा जाती हैं जो बस उनके नियमों से खेलना बंद कर देता है। फिर राजनीति ने अपना रास्ता लिया। जैसा वह हमेशा से करती आई है। जब वह उसे बराबरी की लड़ाई में हरा न सकी, तो उसने दुनिया के सबसे पुराने हथियार का इस्तेमाल किया: घटाव। छीन लेना। घटा देना। सरल बना देना। जनता के सामने एक ऐसा विकल्प रख देना जो पहले से तय हो चुका हो। चौक में हुआ वह सौदा उसी तरह आया जैसे हर सुनियोजित कार्रवाई आती है। लोकतंत्र का भेस धरे हुए। सफ़ाचट जीसस, या दाढ़ीवाला बरअब्बा। स्वतंत्रता या ढाँचा। अप्रत्याशितता या अपनापन। खेल आसान था। ढाँचा जीत गया। जैसा वह लगभग हमेशा जीतता है। पर हार के ठीक उसी क्षण, मुफ़्त में देने ने अपना असली स्वरूप दिखाया। क्योंकि परंपरागत सत्ता प्रतिक्रिया करती है। मुफ़्त में देना समझता है। और उसने एक ऐसे वाक्य से उत्तर दिया जिसे कोई संगठन, कोई सरकार, और कोई एल्गोरिद्म आज तक पूरी तरह समझा नहीं सका है: इन्हें क्षमा कर दो, क्योंकि ये अभी नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं। यह कोई सफ़ाई नहीं थी। यह एक निदान था। बाक़ी काम उसके शिष्यों ने कर दिया। उन्होंने एक किताब लिखी। या शायद उससे भी दुर्लभ कोई चीज़। उन्होंने एक ऐसी कथा लिखी जो सहस्राब्दियों तक ज़िंदा रह सके। हर भाषा में अनूदित। हर संस्कृति से गुज़री हुई। हर धर्म द्वारा व्याख्यायित। विवादित, प्रिय, विकृत, फिर से लिखी गई, बचाई गई, और आक्रांत। और फिर भी आज तक मौजूद।

किसी कॉर्पोरेट विभाग ने कभी उसके वितरण की बराबरी नहीं कर पाई। किसी विज्ञापन के खाके ने उसकी अवधि की नहीं। किसी लोगो ने उसकी पहचान की नहीं। क्योंकि उत्पाद बाज़ारों से होकर सफ़र करते हैं। कथाएँ लोगों से होकर सफ़र करती हैं। इस दृष्टि में कोई ईशनिंदा नहीं है। इसमें केवल कहने का परम अधिकार है। एक ऐसा अधिकार जो उनके बाज़ारों से बाहर विचरता है, स्वतंत्र और बेपरवाह। और जो असहमत हो, वह और किताबें ढूँढ़ने के लिए आज़ाद है, जहाँ वह जो भी ढाँचा उसे ज़्यादा भाए, पढ़ सके। आखिरकार, यही जीसस का पत्ता है। बल की शक्ति नहीं। धन की शक्ति नहीं। सरकार की शक्ति नहीं। मुफ़्त में देने की शक्ति। वह अकेली शक्ति जो अपने कहनेवाले के खेल की मेज़ छोड़ देने के बाद भी चलती रहती है।

फर्दिनांदो